मैंने जो परमात्मा के बारे में पढ़ा व सुना... वो इन नज़रों से देखा

तड़प थी मुझे कोई बन्धनों के चंगुल से निकाले

राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

वो कौन थे, सृष्टि के आदि पिता प्रजापिता ब्रह्मा, प्रथम पुरुष। जीवन में व्यक्ति को और क्या चाहिए! लेकिन मैंने ऐसे मूर्तियों को देखा, बाबा को देखा, मम्मा को देखा, उन्होंने जो कुछ मेरे साथ किया वो तो अविस्मरणीय है। भूल नहीं सकते हम उसको। वो मूर्तियां मेरी आँख से ओझल कभी भी हो नहीं सकती। लेकिन मैं कोई सिर्फ शरीर रूपी बाहर की जो पार्थिव देह है उस मूर्ति की बात नहीं कर रहा, गुण मूर्ति, ज्ञान मूर्ति, योग मूर्ति वो जो उनकी महानता थी उसकी बात कर रहा हूँ। शुरू से लेकर वो एक लम्बी कहानी है, लम्बी दास्तान है, लेकिन एक थोड़ा-सा हिस्सा उसका आज आपको बताना चाहता हूँ।1952 में जब पहली बार मैं सम्पर्क में आया तो उस कहानी को शुरू से नहीं बता रहा लम्बा करके वो तो कई दिन लग जायेंगे। लोग आते हैं कई मधुबन में ये देखने के लिए, चेक करने के लिए कि ये बहन जी जिसने हमें कोर्स कराया है, वो कहती है भगवान आते हैं ब्रह्मा बाबा के तन में, लेकिन ये बाबा कौन है, कैसे उनके तन में आते हैं, मैं ये देखने के लिए नहीं आया। उनसे मिलने के लिए आया। यहाँ आने से पहले मुझे ऐसा लगता था कि जैसे चूहा किसी चूहेदानी में फँस जाये और निकल न पाये अपने आप। तो इस दुनिया में मैं पता नहीं कैसे फँस गया इस चक्रव्यूह में। अब इससे निकलूं कैसे? तरीका आता नहीं है, फँस गया कि ये क्या है, ये आदमी ये कर रहा है, वो आदमी वो कर रहा है, वो आदमी वो कर रहा है मतलब क्या है? मैं समझ नहीं सका।

बहुत तड़प रहा था, रोता था और कहता था हे प्रभु, हे भगवन आप मुझे निकालो। चूहेदानी से चूहा खुद नहीं निकलता है। उसको कोई निकालने वाला होता है। मुझे कोई निकालो इससे, मैं आपको ढूंढ रहा हूँ, मैं नहीं पहचानता आपको। लेकिन आप तो जानते हो मैं आपको याद कर रहा हूँ। कहा जाता है भगवान दयालु हैं, कृपालु हैं आप दया और कृपा करो। ऐसे मेरे मन में विचार चलते रहते थे। लेकिन जब आया तो उन दिनों में ये जो ईश्वरीय विश्व विद्यालय था ये भरतपुर कोठी में था, अभी वहाँ होटल बना हुआ है। पहले-पहले मैं वहाँ गया। मैंने क्या देखा कि जिसको मैंने कल्प वृक्ष में देखा था ब्रह्मा बाबा को, तो जो भरतपुर कोठी से नीचे सड़क तक एक सड़क आती थी क्योंकि ये कोठी बहुत ऊंची थी। उससे सड़क तक आने का काफी बड़ा रास्ता था। वो रास्ता ठीक नहीं था, उसमें पत्थर ही पत्थर थे। और लूज़ पत्थर थे। कोई व्यक्ति वहाँ पाँव रखे लुढ़क जायेगा। पत्थर के साथ खुद भी लुढ़कता हुआ नीचे पहुंचेगा। तो बाबा ने निक्कर पहनी हुई और बाबा के साथ कुछ भाई निक्कर पहने हुए और उस सड़क को ठीक कर रहे। जिसको

> यहाँ आने से पहले मुझे ऐसा लगता था कि जैसे चूहा किसी चूहेदानी में फँस जाये और निकल न पाये अपने आप। तो इस दुनिया में मैं पता नहीं कैसे फँस गया, इस चक्रव्यूह में। अब इससे निकलूं कैसे?

मैंने कल्प वृक्ष में देखा था बैठे हुए, पालथी मारकर योग लगाते हुए, आज उनको निक्कर में देखा। जो सड़क बना रहे थे। कितनी उमर होगी बाबा की, कम से कम 75 साल तो होगी उस टाइम। ये 1952 की बात है। तो उस समय उस सड़क को बना रहे थे। वो कोमल हाथ, बच्चे आयें उनको कोई तकलीफ न हो। कोई बच्चा गिर न जाये, किसी के पाँव में मोच न आ जाये। कैसा ख्याल करता है। और वो खुद पत्थर उठा-उठा कर ठीक कर रहा है।

मैं खड़ा हो गया, मेरी समझ में नहीं आया कि मैं क्या करूँ? मैं गाड़ी से आया था, चेहरा मेरा मिट्टी-मिट्टी से भरा हुआ था। सिर भी और चेहरा भी। और सोचा कि जाके नहाऊं-धोऊं फिर आऊं। एक तरफ ये हुआ कि बाबा ये कार्य कर रहा है और मैं चला जाऊं, ये ठीक नहीं है। ये तो हमाकत है। तो क्या करूँ? मैंने सोचा कि मैं भी इसमें लग जाऊं। बाकी बात बाद में रही। बाबा ने मुझे कहा कि बच्चे जाओ स्नान करो, तैयार हो फिर मिलेंगे, भेज दिया मुझे।

अब पहली-पहली आज्ञा थी बाबा की, मैं उस आज्ञा को टालूं, मैं तो धर्मसंकट में फँस गया। अगर उनकी आज्ञा को टालता हूँ तो भी मैं दोषी हूँ, और अगर मैं उनको कार्य करते हुए देखकर चला जाता हूँ फिर भी दोषी हूँ, क्या करूँ! लेकिन उन्होंने मुखारविंद से कहा कि तुम जाओ तैयार हो। तो मेरा फायदा भी उसी में था। शायद इसीलिए मान गया। तो मैं चला गया। तो ये एक पहली महानता मैंने देखी कि और कई आश्रमों में मैं गया, कई संतों महात्माओं से मिला, कई जगह पर आदेश, उपदेश सुने लेकिन ये इस आयु में भी पत्थर उठा-उठा कर ठीक कर रहा है निक्कर पहन कर। ये है महानता। और गीता में है कि हे अर्जुन, मुझे तीनों लोकों में कुछ नहीं चाहिए। भगवान को क्या चाहिए! कुछ भी नहीं चाहिए,लेकिन फिर भी मैं आता हूँ। और आके कर्म करता हूँ, क्योंकि कर्म करके अगर मैं न दिखाऊं कि ठीक कर्म क्या हैं तो लोग कैसे सीखेंगे? तो मुझे कर्म करके दिखाना पड़ता है कि कर्म कैसे योगयुक्त होकर करने चाहिए। मैंने कहा ये है भगवान के आने का कारण, जो लिखा हुआ है उसमें। आज मैं उस बात को प्रैक्टिकली देख रहा हूँ। मुस्कुराते हुए ऐसा नहीं कोई व्यक्ति सोचे अरे, मैं एक इतना बड़ा जवाहरी था। मेरे पास कारें, बसें, नौकर-चाकर सब थे। महलमाड़ी थी और आज ये हालत है कि मैं खुद पत्थर उठा रहा हूँ। कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो इस काम को करे। मुझे करने पड़ जाता है। हम लोगों में से बहुतों को ऐसा होता है। जब कोई ऐसा काम करना पड़ जाता है जो हम समझते हैं कि ये हमें नहीं करना चाहिए, कोई और होना चाहिए। हम कहते हैं कि ये क्या मुसीबत है, यहाँ इतने सारे लोग हैं कोई नहीं करता है। मुझे करना पड़ता है। खुशी से बाबा कर रहा है। आगे आपको बताऊंगा बाबा ने मुझे क्या एक्सप्लेनेशन दिया उसका।

- क्रमशः

शनि शिंगणापुर-अहमदनगर(महा.)। महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात कर उन्हें गुलदस्ता भेंट करते हुए पुणे मीरा सोसायटी सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. नलिनी बहन, सोनई सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. उषा बहन एवं ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके। महामहिम को ब्र.कु. नलिनी बहन ने पुणे के जगदम्बा भवन रिट्रीट सेंटर द्वारा की जा रही ईश्वरीय सेवाओं की जानकारी दी व रिट्रीट सेंटर में आने का निमंत्रण दिया।

गाज़ियाबाद-गुलमोहर गार्डन(उ.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र में आयोजित दीपावली महोत्सव में सांसद एवं केन्द्रीय राज्यमंत्री जनरल डॉ. वी. के. सिंह, भाजपा के वरिष्ठ नेता राजेन्द्र त्यागी, ब्रह्माकुमारीज़ के रशिया एवं बाल्टिक देशों के सेवाकेन्द्रों की निदेशिका व महिला प्रभाग की अध्यक्षा मुख्य वक्ता राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी, स्थानीय पार्षद सुमनलता पाल, पूर्व पार्षद संजीव त्यागी, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लवली बहन व अन्य गणमान्य लोगों सहित 200 से अधिक लोग शामिल रहे।

दिल्ली-लोधी रोड। गेल(इंडिया) लिमिटेड,भारत सरकार की महारत्न कम्पनी के राष्ट्रीय कार्यालय में सतर्कता जागरुकता सप्ताह के अंतर्गत 'नैतिकता एवं शासन' विषय पर आयोजित संगोष्ठी के दौरान संदीप गुप्ता,सीएमडी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गिरिजा दीदी व ब्र.कु. पीयूष भाई। साथ हैं संदीप सरकार,मुख्य सतर्कता अधिकारी, दीपक गुप्ता,निदेशक एवं आयुष गुप्ता,निदेशक।

राँची-झारखंड। ओरमांझी गांव में ब्रह्माकुमारीज़ के आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, समाजसेवी शिवनारायण साहू, समाजसेवी अशोक कुमार गुप्ता तथा अन्य।

लालगंज-उ.प्र.। उप जिलाधिकारी सुरेन्द्र नारायण त्रिपाठी को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् साथ हैं ब्र.कु. अनिता बहन तथा अन्य।

राजसमंद-राज.। खामनोर हल्दीघाटी महाराणा प्रताप म्यूज़ियम के डायरेक्टर डॉ. मोहनलाल श्रीमाली जी को मेडिटेशन का महत्त्व बताने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पूनम बहन। साथ हैं ब्र.कु. गौरी बहन तथा अन्य।

रशिया-सेंट पीटर्सबर्ग। दीपावली के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'स्वर्णिम युग की ओर सुनहरे कदम' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी एवं राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी तथा अन्य वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. भाई-बहनों ने विडियो संदेश के माध्यम से सभी को शुभकामनाएं दी। ब्रह्माकुमारीज़ सेंट पीटर्सबर्ग की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी ने दीपावली का आध्यात्मिक रहस्य सभी के साथ साझा किया। कार्यक्रम में कुमार गौरव,काउंसिल जनरल ऑफ इंडिया इन सेंट पीटर्सबर्ग एवं विजय कुमार ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में लगभग 250 ब्र.कु. भाई-बहनों ने भाग लिया।

डाकपत्थर-उत्तराखण्ड। 'खुशहाल महिला खुशहाल परिवार' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए जिला अध्यक्षा कृष्णा तोमर, मंडल अध्यक्षा दिव्या राणा, सुनीता गुलेरिया, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुनीता बहन व अन्य।

मनाली-हि.प्र.। लाहौल स्पीति में आयोजित मेले के उद्घाटन पश्चात् डी.सी. राहुल जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ऋतम्भरा बहन।

गाज़ियाबाद-मकनपुर। थाना इंदरापुरम अभय खंड पुलिस स्टेशन गाज़ियाबाद सब इंस्पेक्टर राजकुमार मान को ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. नीलम बहन।